International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 5; May 2017; Page No. 325-331

मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड की लाभदायकता का विश्लेषण

[1] डॉ० अंशुजा तिवारी, [2] देवकन्या गुप्ता

[1] व्यापार महकमा यूटीडी, बरकातुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] अनुसंधान विद्वान, बरकातुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

मध्य प्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड का मध्य प्रदेश में ऊर्जा के नवीन और नवीनीकरणीय संसाधनों की पुर्ती में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्था का मूल उद्देश्य विक्रय कर लाभ कमाना नहीं है यही कारण है कि संस्था को कभी भी लाभ की प्राप्ति नहीं हुई। संस्था द्वारा जो भी विक्रय किया जाता है व न लाभ न विक्रय के आधार पर किया जाता है, तथा संस्था को जो भी आयगत प्राप्तियॉ होती हैं वह मुख्यतः सेवा शुल्क, हैंडलिग चार्जेस व अर्जित ब्याज से मुख्यतः होती है जिनका उपयोग संस्था के प्रबंधकीय व्यय, स्थापना व्यय तथा अन्य आयगत व्ययों की पुर्ती हेतु उपयोगित की जाती है। इन व्ययों की पुर्ती करने में जो भी राशि कम होती है वह हमारी संस्था की हानि है जिसकी प्रतिपुर्ती मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कर दी जाती है।

मूल शब्दः प्रवृत्ति, आयगत–व्यय, प्रतिपुर्ती, आय, अनुपात।

प्रस्तावना

किसी भी व्यवसायिक संस्था की स्थिति का अध्ययन करते समय उसके पिछले इतिहास का अध्ययन करना आवयश्क होता हैं। शोध काल के संमक द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है साथ ही शोध काल के समस्त संमको एवं सूचनाओं के एकत्रीकरण व प्रस्तुतीकरण की विधियों में भिन्न्ता नहीं है। मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड के लाभ हानि खाते के विश्लेषण हेतु लाभ–हानि खाते को आय विवरण के रूप में रूपान्तरित किया है और उसके विश्लेषण के पूर्व उसका सारणीकरण किया है जो विविध तालिकाओं के माध्यम से व लेखांकन तकनीकों के माध्यम से आगे विश्लेषित किया गया है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

- मालवीय गेंदालाल (2004) ने अपना शोध कार्य'' वित्तीय विवरणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ''(म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित, भोपाल के विशेष संदर्भ में)'' विषय को आधार बनाकर पूर्ण किया है, जिसके अंतर्गत शोध कार्य में इन्होने यह निष्कर्ष निकाला की चिट्ठे की स्थिति लाभदायक नहीं है।
- सिंहल गोविंद (1996) द्वारा अपने शोध ग्रंथ ''सहकारी अधिकोषों की संपत्तियों एवं दायित्वों की प्रबंध व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन (1996)'' मे पर क्रमशः उल्लेख किया है कि ''कृषक भुगतान क्षमता से अधिक ऋण प्राप्त कर लेते हैं जिससे ऋण चुकाने में उनको कठिनाई आती हैं बैंक को समय पर ऋण की वापसी नहीं होने के कारण डूबत एवं संदग्धि ऋणों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है '' कृषकों का समय पर ऋण भुगतान न करना चिंतनीय विषय है क्योंकि कृषि आज के समय में मानसून, व यंत्रों पर अधिक निर्भर करती है और अधिकतर यंत्र ऊर्जा पर आज ऊर्जा विकास निगम द्वारा विविध प्रकार की योजनाऐं सौर–चलित पम्प, बायोफ्यूल, बायोगैस आदि चीजे है, जिनमें लागत कम आती है और ऋण लेने की आवश्यकता नहीं होगी। उज्जैन व देवास में व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ाने के प्रयास होना चाहिए। यदि ग्रामों में विद्युत की समस्या हल हो जाएगी तो बेरोजगारी की समस्या भी खत्म हो जाएगी।
- श्रीवास्तव जे.सी. (1997) द्वारा मे की गई अपनी शोध ''कृषि उत्पादो का उत्पादन एवं विपणन प्रबंध'' मे बताया कि म.प्र. किस तरह कृषि उत्पादनों व उनके विपणन को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार से हर क्षेत्र में प्रयास कर रहा हैं। जिसमें विघुत भी एक विषय हैं क्योकि म.प्र. के अभी भी कई ऐसे गांव है जिनका विघुतीकरण अभी भी नही हुआ हैं और बिना विघुतीकरण के कृषि उत्पादन में वृद्धि असम्भव हैं क्योकि सिचांई, बोआई, कटाई आजकल सभी आधुनिक तकनीको से की जा रही हैं। इस हेतु विघुत का पर्याप्त मात्रा मे होना आवश्यक हैं। इसलिए हमे गांव के विघुतीकरण की ओर भरसक प्रयास करने की आवश्यकता हैं।
- गोस्वामी एस.बी. (1998) द्वारा में अपने शोध ''आदिवासियो के आर्थिक विकास के संस्थागत ढ़ॉचे का प्रबन्धकीय अध्ययन'' प्रस्तुत की गई जो म.प्र. के विशेष संदर्भो मे थी जिसमें उन्होने म.प्र.राज्य के आदिवासियो की आर्थिक स्थिति हेतु अपने शोध निष्कर्ष में लिखा की उनका आर्थिक विकास तभी सम्भव है जब उन्हें आधुनिक उपकरणो व तकनीकों के उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जायें। ताकि वह जो भी निर्माण करें व आधुनिक आवश्यकताओ की पूर्ति के साथ–साथ सुन्दर व आकर्षक भी दिखें। किन्तु आधुनिक उपकरणो व यंत्रो के लिए विघुत एक बड़ी बाधा हैं। जिसके आभाव में किसी भी प्रकार का यंत्र कार्य नही कर सकता और आदिवासी क्षेत्रों में पूर्ण विद्युतीकरण नही हो सकता।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध कार्य के उद्देश्य इस प्रकार है

1. मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड, भोपाल के लाभ हानि खाते का प्रवृत्ती विश्लेषण करना व शोध से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर आवश्यक सुझाव देना।
2. मध्य प्रदेश ऊर्जा विकास निगम को प्राप्त अनुदान एवं व्ययों के आधार पर लाभदायक्ता का विश्लेषण कराना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में द्वितीय समंकों का उपयोग किया गया हैं द्वितीय

संमकों के संग्रहण के लिऐ संस्था द्वारा प्रकाशित, वर्ष 2001–02 से वर्ष 2010–11 तक (10 वर्षो का) के जर्नल वार्षिक, प्रतिवेदनों एवं रिकार्डो का सहारा लिया है। उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर निष्कर्ष निकालने के लिए प्रवृत्ति विवरण विश्लेषण विधि, अनुपात विश्लेषण विधि सांख्यिकी माप (विधियॉ) जैसे प्रतिशतता, रेखाचित्रों, तालिकाओं आदि का उपयोग किया गया है।

मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड के लाभ हानि खाते का प्रवृत्ति विश्लेषण (Trend analysis of P&L A/C of Madhya Pradesh Urja Vikas Nigam Ltd.)

मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड के लाभ हानि खाते के विश्लेषण हेतु हमने लाभ–हानि खाते को आय विवरण के रूप में रूपान्तरित किया है और उसके विश्लेषण के पूर्व उसका सारणीकरण किया है जो विविध तालिकाओं के माध्यम से व लेखांकन तकनीकों के माध्यम से आगे विश्लेषित किया गया है । प्रवृत्ति विश्लेषण हेतु शोध काल (2001–02 से 2010–11 तक) के लाभ हानि खाते को आय विवरण के रूप में परिवर्तित कर प्रत्येक वर्ष की मद का उसके आधार वर्ष 2001–02 से की मद से अंतर ज्ञात कर उसकी प्रवृत्ति शोध काल के अंतिम वर्ष 2010–11 तक विश्लेषित की है । प्रवृत्ति विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य विभिन्न मदों की प्रवृत्ति का अध्ययन करना था इस हेतु हमने निम्न सूत्र का प्रयोग किया है:–

$$\text{प्रवृत्ति प्रतिशत (Trend percentage)} = \frac{\text{चालू वर्ष का मूल्य (Current year price)}}{\text{आधार वर्ष का मूल्य (Base year price)}} \times 100$$

तालिका क्रमांक 1: मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के लाभ–हानि खाते का प्रवृति विश्लेषण (Trend Analysis of Profit and Loss a/c of M.P. Urja Vikas Nigam Ltd., from 31st March 2002 to 31st March 2011 (Amount in thousands)

Particulars	Base year	Base year %	Trend % of change								
	2001-02	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
Expenses											
Gross Sales	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Sales Return	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Net Sales	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Total Cost Of Goods Sold	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Opening Stock	1935	100	NIL	NIL	NIL	99.84	35.35	35.34	35.34	35.29	55.81
Add:--Purchase	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Add:--Manufacturing Expenses	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Less:-Closing Stock	1935	NIL	NIL	NIL	99.84	35.35	35.35	35.34	35.29	55.81	43.69
Gross Profit/Loss	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Establishment Charges	28269	100	94.43	81.84	80.20	84.03	86.18	210.55	230.94	260.55	337.58
Administrative Expenses	4694	100	116.76	102.90	87.98	109.35	98.21	179.22	178.95	164.87	306.66
Depreciation	676	100	73.70	70.27	53.55	42.75	33.72	26.77	21.74	20.41	74.70
Previous Year Expenses	557	100	136.984	40.75	459.78	317.41	122.08	125.85	157.09	264.45	NIL
Total Expenses (A)	34196	100	97.786	83.83	87.36	91.74	88.52	202.55	219.88	242.74	372.35
Incomes											
Service Charges	884	100	110.63	70.25	58.82	82.13	417.19	NIL	NIL	NIL	NIL
Handling Charges	211	100	7.58	21.33	23.70	8.53	14.69	8.06	0.95	3.79	3.32
Accrued Interest	943	100	86.96	53.13	216.86	368.19	686.64	1251.01	1865.32	1698.30	1390.99
Other Receipts	582	100	62.20	109.62	148.97	1751.37	1606.36	3750.69	2846.39	3879.55	6297.94
Total Incomes (1)		100	83.05	68.89	132.90	549.96	745.92	1345.69	1489.35	1641.30	2872.52
Other Incomes	-										
Rewriting Of Depreciation	1	100	7500	3100	300	67600	400	100	100	600	100
Profit From Sale On Assets	1	100	200	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL	NIL
Total other incomes (2)	2	100	3850	1550	150	33800	200	50	50	300	50
(1+2)Net Total Income(B)	2622	100	85.93	70.02	132.91	1087.49	745.50	1347.33	1493.55	1645.27	2870.37
Profit /Loss (A-B)	-31574	100	98.77	84.99	83.58	9.05	33.96	107.49	114.11	126.27	164.91
Amount received from M.P.Govt. for deficiency	31574	100	98.77	84.99	83.58	9.05	33.96	107.49	114.11	126.27	164.91

स्त्रोतः मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

स्त्रोतः मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

ग्राफ क्रमांक 1: मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के कुल आय–व्यय व हानि का प्रवृत्ति विशलेषण

मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड के लाभ हानि खाते (आय विवरण) का प्रवृत्ति विश्लेषण का निर्वचन

निगम के प्रवृत्ति विशलेषण द्वारा हम आय व व्ययों की विविध मदों की प्रवृत्ति का अध्ययन आधार वर्ष 2001–02 की तुलना में शोधकाल के अंतिम वर्ष 2010–11 तक करने में समर्थ हुए, विविध आय व व्यय ऐसे थे जो आधार वर्ष में नही थे । अतः हम उनकी आधार वर्ष से प्रवृत्ति का ज्ञान नहीं कर पाये ।

आय (Income)

सेवा शुल्क (Service Charges) :– निगम के सेवा शुल्कों में वृद्धि व कमी लगातार हुई व निगम के सेवा शुल्कों की प्राप्ति की प्रवृत्ति 110.63,70.25,58.82,82.13 व 417.19 प्रतिशत आधार वर्ष की तुलना में रही सर्वाधिक बढ़ोत्तरी वर्ष 2006–07 में रही व सर्वाधिक कम प्रवृत्ति वर्ष 2004–05 में रही । वर्ष 2006–07 के पश्चात् यह आय शून्य हो गई ।

हेन्ड़लिंग चार्जेस (Handling Charges) :– निगम के हैन्ड़लिंग चार्जेस की प्रवृत्ति कमी को दर्शाती है जो क्रमशः 7.58, 21.33, 23. 70, 8.53, 14.69, 8.06, 0.95, 3.79 व
3.32 प्रतिशत रही । सर्वाधिक कमी की प्रवृत्ति वर्ष 2008–09 में दर्ज की गई ।

अर्जित ब्याज (Accrued Interest) :– निगम के अर्जित ब्याजों की प्रवृत्ति अत्यधिक विचलित है यह क्रमशः 86.96, 53.13, 216.86, 368.19, 686.64, 1251.01, 1865.32, 1698.30 व 1390.91 रही । सर्वाधिक प्रवृत्ति वर्ष 2008–09 में आधार वर्ष की तुलना में 1865. 32 दर्ज की गई ।

अन्य प्राप्तियॉ (Other Receipts) :– निगम की अन्य प्राप्तियों में वर्ष 2002–03 में कमी आई व निगम की प्राप्तियों में वर्ष 2003–04 से लगातार वृद्धि हुई जो कि क्रमशः 109.62, 148.97ए 1751.37, 1606.35ए 3750.68 प्रतिशत की वृद्धि थी सर्वाधिक वृद्धि वर्ष 2010–11 में आधार वर्ष की तुलना में 6297.94 प्रतिशत की थी।

मुल्य ह्रास का पूर्नलेखांकन (Re Writting of Depriciation): निगम के मूल्य ह्रास के पूर्नलेखांकन की प्रवृत्ति अत्यधिक रही । जो क्रमशः 7500, 3100, 300, 00, 400, 100, 100, 600 व 100 प्रतिशत रही ।

सम्पत्तियों के विक्रय से लाभ (Profit on Assests sale) :– निगम को सम्पत्तियों के विक्रय से लाभ वर्ष 2001–02 की तुलना में वर्ष 2002–03 में 200 प्रतिशत हुआ।

व्यय (Expenses)

स्थापना व्यय (Establishment Expenses) :– निगम के स्थापना व्ययों में वर्ष 2002–03 से लगातार वृद्धि व कमी दर्ज की गई जो कि क्रमशः 94.43, 81.83, 80.20, 84.03, 86.13, 210.55, 230.94, 260.55 व 337.58 प्रतिशत थी । सर्वाधिक वृद्धि की प्रवृत्ति वर्ष 2010–11 में रही जो वर्ष 2001–02 की तुलना में 337.58 प्रतिशत थी निगम के स्थापना व्यय वर्ष 2001–02 की तुलना में सबसे कम कमी की प्रवृत्ति 2004–05 में दर्शाते हैं जो 80.20 प्रतिशत है ।

प्रबंधकीय व्यय (Administrative Expenses): निगम के प्रबंधकीय व्ययों में वर्ष 2001–02 की तुलना में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति दर्ज की गई जो क्रमशः 116.76, 102.89, 87.98, 109.35, 98.210, 179. 22, 178.95, 164.87, 306.66 प्रतिशत की थी निगम के प्रबंधकीय व्यय वर्ष 2001–032 की तुलना में मात्र 2 वर्ष 2004–05 व 2006–07 में कमी प्रदर्शित करते हैं ।

मूल्य ह्रास (Depraciation):– निगम के मूल्य ह्रास की राशि में कमी की प्रवृत्ति पायी गई है जो आधारवर्ष 2001–02 की तुलना में क्रमशः 73.66, 70.26, 53.55, 42.75, 32.72, 26.77, 21.74, 20.41, 74.70 प्रतिशत की दर से है ।

स्कंध पर मूल्य ह्रास (Stock Depreciation) :– निगम का स्कंध मूल्य ह्रास वर्ष 2001–02 की तुलना में वर्ष 2002–03 में भी 100 प्रतिशत था।

पूर्व वर्षों के व्यय (Previous year Expenses):– निगम के पूर्व वर्षों के व्ययो में वर्ष 2002–03 में आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि 136.98 व वर्ष 2003–04 में आधार वर्ष की तुलना में 40.75 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई वर्ष 2004–05 में 459.78 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो कि शोध काल में सर्वाधिक वृद्धि थी वर्ष 2005–06 से वर्ष 2010–11 तक लगातार वृद्धि हुई जो क्रमशः 317.41, 122.03, 125.85, 157.09, 264.45 प्रतिशत की वृद्धि थी, किन्तु वर्ष 2010–11 में पूर्व वर्षों में किए गए व्यय नहीं थे।

कुल व्यय (Total Expenses)– निगम के कुल व्यय वर्ष 2001–02 की तुलना में वर्ष 2002–03 में 97.78 प्रतिशत थी जिनमें कमी वर्ष 2006–07 तक 83.83, 87.35, 91.74, 88.52 प्रतिशत कमी आई व वर्ष 2007–08 से इसमें वृद्धि हुई जो क्रमशः 202.55, 219.88, 242. 74, 372.35 प्रतिशत की थी ।

शुद्ध लाभ/हानि (Net Profit/ Loss):– निगम को आधार वर्ष से ही शुद्ध लाभ नहीं था तथा आधार वर्ष से ही शोधकाल के अंतिम वर्ष तक हानि रही, जो आधार वर्ष की तुलना में 98.77, 84.98, 83. 58, 9.05, 33.96, 107.49, 114.11, 126.27, 164.91 प्रतिशत की थी। निगम की हानियों सर्वाधिक हानियों की प्रवृत्ति वर्ष 2005–06 में आधार वर्ष की तुलना में 9.05 प्रतिशत पाई गयी । और सर्वाधिक वृद्धि शोधकाल के अंतिम वर्ष 2010–11 में रही।

मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड के लाभ हानि खाते (आय विवरण) का अनुपात विश्लेषण व निर्वचन

अनुपात विश्लेषण (Ratio Analysis)

वित्तीय विवरणों के निर्वचन में अनुपात विश्लेषण का महत्व है अनुपातों के आधार पर विश्लेषक अंकों की सतह तक पहुंच सकता है व्यक्तिगत मदों से संबंधित संमक अपने आप में थोड़ा या कुछ भी मायने नहीं रखते हैं उनकी पूर्णतया योग्यता अन्य मदों के संबंध पर ही निर्भर करती है। निः संदेह अनुपात प्रबंध के लिए अमूल्य औजार होते हैं। अनुपातों की गणना हमारा लक्ष्य नहीं किन्तु हमारे लक्ष्य की प्राप्ति का साधन आवश्यक है। प्रस्तुत अध्याय में हमनें लाभ हानि खाते से संबंधित समस्त अनुपात ज्ञात किये हैं। इन अनुपातों को हम संचालन अनुपात भी कहते हैं।

मध्य प्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदान का व्ययों से अनुपात (Expenses to Total Grant Received from M.P. Government)

तालिका क्रमांक 2:- मध्य प्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदान का व्ययों से अनुपात Expenses to Total Grant Received from M.P. GovernmentAmount in Thousand

Year	Expenses	Total Grant receieved	Ratio
2001-02	34196	31574	1.08
2002-03	33439	31186	1.07
2003-04	28667	26831	1.06
2004-05	29873	26388	1.13
2005-06	31373	2859	10.97
2006-07	30271	10724	2.82
2007-08	69266	33939	2.04
2008-09	75190	36029	2.08
2009-10	83009	39870	2.08
2010-11	127329	52068	2.44

स्त्रोतः– मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

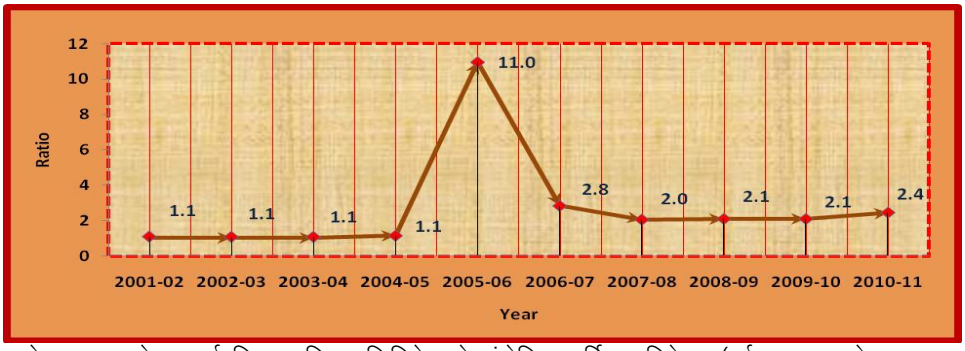

स्त्रोतः– मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

ग्राफ क्रमांक 2: मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड निगम की व्ययों का प्राप्त अनुदान से अनुपात

चूंकि निगम को जो भी हानि होती है उसकी प्रति–पूर्ती मध्यप्रदेश शासन द्वारा करदी जाती है, अर्थात् निगम की हानि का अनुपात व मध्यप्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदानित राशि का अभिप्राय एक ही है। प्रस्तुत अनुपात को हम निगम की हानि का अनुपात भी कह सकते हैं ।

उपरोक्त अनुपात विश्लेषण हेतु निम्न सूत्र का प्रयोग किया है:–

$$\text{निगम के व्ययों का प्राप्त अनुदान से अनुपात} = \frac{\text{निगम के कुल व्यय (Total Expenditure of Nigam)}}{\text{मध्यप्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदान (Aid Received from MP.Govt)}}$$

प्रस्तुत अनुपात ज्ञात करने से हमें यह जानने में सहायता मिलती है कि व्यय का कुल अनुदान से कितना अनुपात है, यदि हम प्राप्त अनुदान का अध्ययन करे तो प्रथम पॉच वर्षो का औसत व्यय प्राप्त अनुदान की तुलना में 3.60 थे । अर्थात व्ययों के अधिकांश भाग की पूर्ति लगभग 2,60 की निगम स्वंय के संचालन आय से करती रही है निगम एक प्रमोशनल संस्था हैं, व लाभ कमाना इसका उद्देश्य नहीं है, किन्तु फिर भी निगम स्वंय की संचालन क्रियाओं से अपने व्ययों की पूर्ति हेतु व्यवस्था करता है, शोधकाल के अंतिम पॉच वर्षों मे निगम के व्ययों का कुल अनुदान से प्राप्त औसत अनुपात 2.73 है अर्थात् प्राप्त अनुदान से 2.71 गुना निगम के व्यय है, जिसका भुगतान निगम स्वंय करता हैं, सर्वाधिक अनुपात वर्ष 2005–06 में रहा जो 10.97 था अर्थात् अनुदान से 10.97 गुना निगम के व्यय थे इस वर्ष निगम की अन्य आयो में वृद्धि रही जो 14409 हजार रू. की रही व अन्य वर्षो की तुलना में सबसे कम हानि हुई सबसे कम अनुपात 2003–04 में रहा जो 1.06 रहा अर्थात् निगम अपने व्ययों की पूर्ति हेतु मात्र 0.06 भाग राशि ही जुटा पाया। निगम के यदि 10 सालो का औसत अनुपात आंकलित किया जाए जो वह 2.68 है अर्थात् निगम अपने व्ययों का 1.68 भाग स्वंय जुटाने में विविध आयो के माध्यम से सक्षम हैं।

मध्य प्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदान का कुल आय से अनुपात (Income to Total Grant Received from M.p. government)

तालिका क्रमांक 3: मध्य प्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदान का आय से अनुपात (Income to Total Grant Received from M.P. Government Amount in Thousand)

Year	Incomes	Total Grant receieved	Ratio
2001-02	2622	31574	0.08
2002-03	2253	31186	0.07
2003-04	1836	26831	0.06
2004-05	3485	26388	0.13
2005-06	28514	2859	9.97
2006-07	19547	10724	1.82
2007-08	35327	33939	1.04
2008-09	39161	36029	1.08
2009-10	43139	39870	1.08
2010-11	75261	52068	1.44

स्त्रोतः– मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

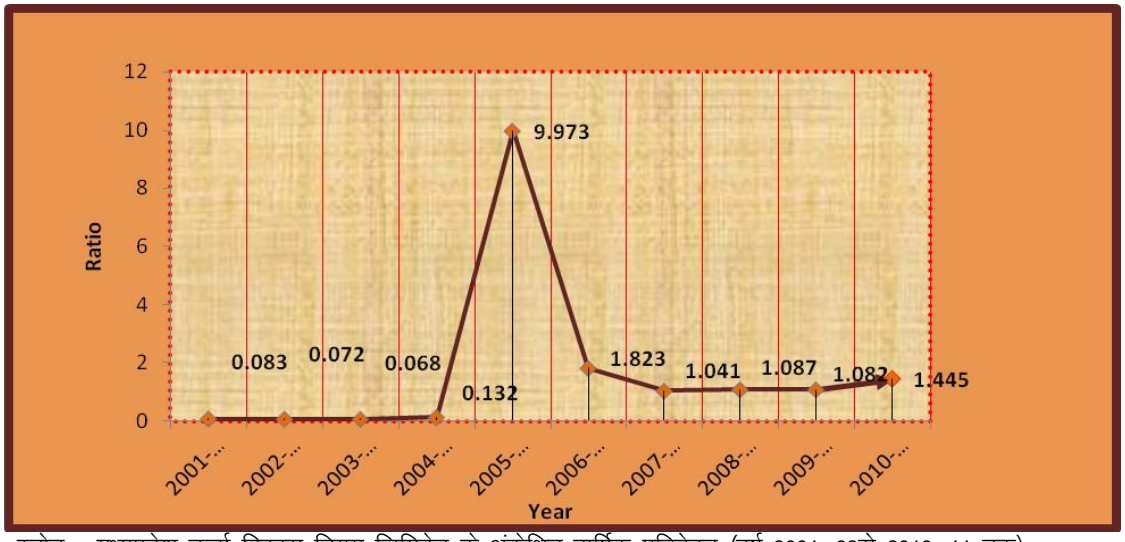

स्त्रोतः– मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

ग्राफ क्रमांक 3: मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड निगम की आय का प्राप्त अनुदान से अनुपात

उपरोक्त अनुपात विश्लेषण हेतु निम्न सूत्र का प्रयोग किया है:–

निगम की आय का प्राप्त अनुदान से अनुपात

$$= \frac{\text{निगम की कुल आय (Total Income of Nigam)}}{\text{मध्यप्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदान (Aid Received from MP.Govt)}}$$

इस अनुपात का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि निगम प्राप्त अनुदान की तुलना में स्वयं के साधनों से कितनी आय का अर्जन करने में समर्थ है, निगम का प्रथम पॉच वर्षो का औसत अनुपात अनुदान की तुलना में 2.06 रहा तथा शोध काल के अंतिम पॉच वर्षो का यदि विश्लेषण करते है, तो अंतिम पॉच वर्षो में आय का कुल अनुदान से औसत अनुपात 1.29 रहा। आय का सर्वाधिक अनुपात वर्ष 2005–06 में रहा जो 9.97 था इस वर्ष निगम को अन्य वर्षों की तुलना में सर्वाधिक अन्य प्राप्तियों की आय प्राप्त हुई, आय का सबसे कम अनुपात वर्ष 2003–04 में रहा जो कि 0.068 था इस वर्ष निगम को सबसे कम आय का अर्जन हुआ आय का अनुपात पूरे शोधकाल में औसतन 1.68 रहा ।

व्ययों का निगम की कुल आय से अनुपात (Expenses Ratio to Income)

तालिका क्रमांक 4: मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड निगम के व्ययों का कुल आय से अनुपात Amount in Thousand

Year	Expenses	Total Incomes	Ratio
2001-02	34196	2620	13.05
2002-03	33439	2176	15.37
2003-04	28667	1805	15.88
2004-05	29873	3482	8.58
2005-06	31373	14409	2.18
2006-07	30271	19543	1.55
2007-08	69266	37257	1.86
2008-09	75190	39021	1.93
2009-10	83009	43002	1.93
2010-11	127329	75260	1.69

स्त्रोतः– मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

स्त्रोतः– मध्यप्रदेश उर्जा विकास निगम लिमिटेड के अंकेक्षित वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02से 2010–11 तक)

ग्राफ क्रमांक 4: मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड निगम के व्ययों का कुल आय से अनुपात

उपरोक्त अनुपात विश्लेषण हेतु हमने निम्न सूत्र का प्रयोग किया है:–

$$\text{निगम के व्ययों का आय से अनुपात} = \frac{\text{निगम के कुल व्यय (Total Expenditure)}}{\text{निगम की कूल आय (Total Income)}}$$

प्रस्तुत अनुपात दर्शाता है कि निगम के कुल व्यय उसकी आय की तुलना में कितने हैं ?

निगम के व्यय आय की तुलना में औसत 11.012 रहे व अंतिम पॉच वर्षो में निगम के व्यय आय की तुलना में औसत 1.79 रहे, निगम के औसतन व्यय शोधकाल में आय की तुलना में 6.40 रहे। निगम का अधिकतम अनुपात पुरे शोध काल में वर्ष 2003–04 में 15.88 रहा इस वर्ष सर्वाधिक व्यय व सबसे कम संचालन संबधित आय रही, वर्ष 2006–07 में व्ययों का सबसें कम अनुपात 1.54 रहा मुख्य कारण निगम की आयो मे वृद्धि होना रहा।

निष्कर्ष

मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड की लाभदायकता जॉचने हेतु निगम के लाभ–हानि के खातों का वर्ष 2001–02 से 2010–11 तक विभिन्न लेखांकन व सांख्यिकी तकनीकों की सहायता से विश्लेषित किया। इस विश्लेषण से शोधार्थी को ज्ञात हुआ कि निगम को लाभ–प्राप्ती नही हो पाई साथ ही जो भी हानि निगम को प्राप्त हुई है उसकी प्रति–पूर्ती राज्य सरकार द्वारा कर दी जाती है । साथ ही यह भी ज्ञात हुआ कि निगम के व्ययों में स्थापना व्ययों की अधिकता है, निगम को अपने संसाधनों के माध्यम से आय बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, जैसा कि शोधकाल के अंतिम वर्षों में प्रबंधकीय आय व अन्य प्राप्तियों में बड़ी हुई आय में हुआ।

- निगम की अधिकृत पूंजी में शोधकाल में कोई परिवर्तन दर्ज नहीं हुआ
- निगम की प्रदत्त व प्राप्त पुंजी में शोधकाल में कोई परिवर्तन दर्ज नहीं हुआ
- निगम द्वारा परियोजना व्ययों के लिए प्राप्त राशियों की तुलना में उपयोगित राशि का आधिक्य आरंभ के मात्र दो वर्ष रहा, इसका मुख्य कारण निगम को स्वीकृत राशि का प्राप्त होने में रूकावट आना था
- निगम संचय व आधिक्य की राशि में वर्ष 2005–06 में सर्वाधिक कमी –70.59 प्रतिशत आई इसका कारण निगम के संचय व आधिक्य के विनियोग की राशि में परिवर्तन होना था

सुझाव

निगम भारत सरकार द्वारा संस्थापित एक उपक्रम है और निगम द्वारा उन्हीं नीतियों व योजनाओं का क्रियान्वयन संभव है जो भारत सरकार से स्वीकृत व निर्धारित हो तथा निगम द्वारा किये जाने वाले परियोजना कार्य भारत सरकार द्वारा स्वीकृत बजट व प्रदाय राशि पर निर्भर करते हैं यथापि उपरोक्त कार्यों की समस्याएं निगम के नियंत्रण में नहीं है तथापि शोधार्थी द्वारा कुछ सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं जो निम्नानुसार हैं:–

- **जागरूकता अभियान संबंधी सुझाव**– निगम का प्रमुख कार्य गैरपारम्परिक संसाधनों को लोकप्रिय बनाना है अतः लोगों को ओर अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है। ऊर्जा संरक्षण व गैरपारम्परिक ऊर्जा संसाधनों के प्रति आकर्षण मात्र जागरूकता से ही संभव है।
- **लेखांकन संबंधी सुझाव**– लेखांकन की विभिन्न मदों की समस्या लेखांकन नियमों व विचारधाराओं के कारण पाई गईं जिस हेतु प्रबंधन व अंकेक्षण सह–विचार विमर्श कर संशय का निराकरण करा सकते हैं।
- **वित्त संबंधित सुझाव**– निगम को प्राप्त होने वाली वित्त की समस्या परियोजना कार्यों के माध्यम से प्रस्ताव भेजकर सुलझाना चाहिए।
- **लागत संबंधी सुझाव** – आधुनिक समय की आवश्यकता ऊर्जा है व ऊर्जा प्राप्ति के संसाधनों में कमी गैरपारम्परिक ऊर्जा संसाधनों को आकर्षित करती है । अतः लागत कम करने हेतु प्रयास किये जाना चाहिए साथ ही लागत मूल्य को किश्त में भुगतान करने लायक योजनाएं लाना चाहिए।

उपसंहार

शोधार्थीयों द्वारा विश्लेषित किये गये लाभ–हानि खाते में निगम का शोधकाल में कोई विक्रय, विकृत माल की लागत, सकल लाभ शोधकाल में शून्य रहा क्योंकि निगम द्वारा किसी भी प्रकार का विक्रय नहीं किया जाता है । जो विक्रय किया भी गया है तो वह अनुदानित है। शोधार्थीयों ने विश्लेषण में पाया कि निगम के आय–व्यय में लगातार वृद्धि दर्ज की गई है, शोधकाल में निगम को किसी भी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं हुआ व जो हानि हुई उसकी प्रतिपूर्ती मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनुदान राशि के रूप में पूर्ती की गई । शोधार्थीयों द्वारा शोध पत्र के मध्यम से पाया गया कि मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड को प्राप्त अनुदान राशि में लगातार कमी रही जिसकी मुख्य वजह निगम द्वारा स्वंय

ही व्ययों की पूर्ती करना रहा जो इंगित करता है कि भविष्य में निगम आर्थिक रूप से सुद्रढ होगा।

संधर्व सूची

1. गुप्ता एस. पी. (2001), ''प्रबंधकीय लेखांकन'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
2. जैन बी. एम. (2000), ''शोध प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीक'' रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3. जे. के. अग्रवाल एवं आर.के. अग्रवाल (1998), ''प्रबंधकीय लेखांकन'' रमेश बुंक डिपो, जयपुर
4. कुलश्रेष्ठ आर. एस. (2008), ''वित्तीय प्रबंध'' साहित्य भवन पब्लिशर्स, आगरा।
5. कुलश्रेष्ठ आर. एस. (2001), '' वित्तीय प्रबंध'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
6. कपिल डॉ. एच. के. (2012), '' अनुसंधान विधियां (व्यवहारिक विज्ञानों में)'', एच.पी.भार्गव बुक हाउस, आगरा, पन्द्रहवां संस्करण।
7. मेहता डॉ. एच. के. (2010), ''प्रबंधकीय लेखाविधिक'' एस.बी. पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
8. नायक, डॉ, शशि (1988), ''म.प्र. का आर्थिक विकास'' म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
9. श्रीवास्तव नीति (2008) ''मध्यप्रदेश में आधारभूत और संरचनात्मक विकास का अध्ययन'' शोधग्रन्थ, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
10. मालवीय गेंदालाल (2004) ''वित्तीय विवरणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित, भोपाल के विशेष संदर्भ में)'' शोधग्रन्थ, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
11. गोस्वामी एस.बी. (1998) ''आदिवासियों के आर्थिक विकास के संस्थागत ढॉचे का प्रबंधकीय अध्ययन'' शोधग्रन्थ, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
12. सिंहल गोविन्द (1996) ''सहकारी अधिकोषों की सम्पत्तियों एवं दायित्वों की प्रबंध व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन'' शोधग्रन्थ, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
13. वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2001–02 से 2010–11) ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड भोपाल
14. मेमोरण्डम एण्ड आरटिकल ऑफ एसोशिएशन ऑफ मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड
15. प्रथम वार्षिक प्रतिवेदन मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम
16. Agrawal M.D. & Agrawal, N.P.(2007)"Financial Management'' Ramesh Book Depot, Jaipur,
17. Agrawal A.N. (1996), "Indian Economics" Problem of Development and Planning,
18. Kothari CR. Research Methodology Method, Techniques Wisva Prakashan, New Delhi
19. Pandey JM. Financial Management Vikash Publication House Pvt.Ltd. New Delhi, 1997.
20. Sooth GP. Energy from sun Matrix Integration Publishers New Delhi, 1992.
21. http://www.mpgov.nic.in
22. www.mnre.co.in
23. Search engine www.google.com, www.yahoo.com